⇓वैश्वीकृत भारत में आगरा जनपद के श्रमिकों में अलगाव : कार्ल मार्क्स के अलगाव के सिद्धांत की प्रासंगिकता,

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनीवर्सिटी)की राजनीति विज्ञान में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रस्ताविका 2014

विभागाध्यक्ष | **संकाय प्रमुख,**

प्रो0 पूर्णिमा जैन
समाजशास्त्र एवं राजनीतिशास्त्र विभाग,

प्रो0 संजीव स्वामी
समाज विज्ञान संकाय,

निर्देशिका | **सह – निर्देशिका**

प्रो0 पूर्णिमा जैन
समाजशास्त्र एवं राजनीतिशास्त्र विभाग,

डा. विन्नी जैन
सेन्ट जोन्स कॉलेज, आगरा

शोधार्थी

गोपाल कृष्ण परिहार

समाजशास्त्र एवं राजनीतिशास्त्र विभाग

समाज विज्ञान संकाय

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनीवर्सिटी)
दयालबाग , आगरा

भूमिका :

विश्व में सामाजिक, राजनीतिक एवं शैक्षिक जगत में मार्क्सवादी दर्शन का विशिष्ट स्थान रहा है। मार्क्सवादी विचारधारा से सम्पूर्ण वैश्विक जगत विभिन्न आयामों में प्रभावित होता आया है,जिसमें भारतीय समाज भी सम्मिलत है। वैश्वीकरण ने उत्पादन प्रक्रिया व उत्पादन साधनों पर व्यापक प्रभाव डाला है। वर्तमान समय में नवीन तकनीकों एवं उच्चतर प्रौद्योगिकी ने उत्पादन के साधनों,तरीकों तथा संबंधों में क्रान्तिकारी परिवर्तन किये है।

आर्थिक क्षेत्र के अन्तर्गत उत्पादन के नवीन साधनों के उपयोग होने के फलस्वरूप नये प्रकार के आर्थिक संबंध उत्पन्न हो रहे हैं,जिनको हम पूँजीवादी व्यवस्था के रूप में देख सकते हैं। 1990 के दशक से विश्व के लगभग सभी देशों की तरह भारत में भी बहु–राष्ट्रीय कंपनियों को स्थापित होने का उचित अवसर प्राप्त हो गया हैं,जिसके फलस्वरूप सामाजिक–आर्थिक तथा राजनीतिक व्यवस्था में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे है।

मार्क्सवादी विचारधारा के अनुसार उत्पादन के साधनों में परिवर्तन होने से राजनीतिक संरचना में भी बदलाव आता हैं। वर्तमान समय में सेवा क्षेत्र के एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में उभरने के परिणामस्वरूप कार्य की प्रकृति में बदलाव के साथ–साथ सामाजिक संबंधों में भी परिवर्तनदृष्टि–गोचर हो रहे हैं।

अलगाव उत्पन्न होने के परिणाम–स्वरूप व्यक्ति पूर्ण रूप से ना तो राजनीतिक भागीदारी कर पाता हैं और ना ही अपनी स्वतंत्रता का उपयोग कर पा रहा है। इस प्रकार श्रमिकों की निम्न राजनीतिक भागीदारी से सही अर्थों में लोकतंत्र की स्थापना नहीं हो पाती है,इसके परिणाम–स्वरूप संम्पूर्ण व्यवस्था अभेद परिवर्तनों के दौर से गुजर रही हैं। वर्तमान आर्थिक व्यवस्था में उत्पादन के नये–नये क्षेत्र उभरकर सामने आ रहे हैं जिसमें विनिर्माण क्षेत्र तथा चमड़ा उद्योग क्षेत्र आगरा जनपद के संदर्भ में प्रमुख रूप से शामिल हैं। इन नव उदित उत्पादन के क्षेत्रों में श्रमिकों की मांग लगातार बढ़ रही है तथा श्रमिक–वर्ग भी इन क्षेत्रों की ओर आकर्षित हो रहा हैं,इनमें भवन निर्माण उद्योग से लेकर चमड़ा उद्योग तथा औद्योगिक उत्पादन उद्योंगों को शामिल किया जा सकता हैं।

मार्क्सवादी विचारधारा में अलगाव के सिद्धांत का अपना विशिष्ट स्थान हैं। कार्ल–मार्क्स ने अपनी पुस्तक ''इकॉनॉमिक एण्ड फिलॉसॉफिक मैनुस्क्रिप्टस ऑफ 1844'' में

अलगाव के सिद्धांत की व्याख्या की है। अलगाव का शाब्दिक अर्थ स्नेहवृत्ति,विरक्ति,विसंबंधन तथा परायापन होता हैं। कार्ल–मार्क्स पूॅजीवादी व्यवस्था की आलोचना करते हुए कहते है कि पूॅजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत मनुष्य में अपनापन या लगाव नहीं रहता,वह प्रकृति से,अपने समाज से,यहॉ तक कि वह अपने आप से भी पराया हो जाता हैं। अतः परायेपन को दूर करने के लिए पूॅजीवादी व्यवस्था को समाप्त करना आवश्यक हैं। कार्ल–मार्क्स ने अलगाव के चार चरणों का वर्णन किया हैं। (गाबा : 2001: 497)

कार्ल–मार्क्स का मानना था कि पूॅजीवादी व्यवस्था में सर्वप्रथम मनुष्य उत्पादन तथा उत्पादन प्रक्रिया से अलगावित हो जाता हैं क्योंकि पूॅजीवादी उत्पादन प्रक्रिया में वस्तुओं के उत्पादन में श्रमिक–वर्ग की इच्छा का कोई महत्व नहीं होता हैं,पूॅजीवादी व्यवस्था में उन्हीं वस्तुओं का उत्पादन किया जाता हैं,जिससे पूॅजीपतियों को अधिकतम लाभ प्राप्त हो सके,लेकिन समकालीन समाज में श्रमिकों की दशायें मार्क्स द्वारा व्यक्त की गयी दशाओं से भिन्न हो सकती हैं,क्योंकि मार्क्स के समय सामाजिक संरचना आज की सामाजिक संरचना से भिन्न थी। मार्क्स के समय सेवा क्षेत्र का विस्तृत विकास नहीं हुआ था,लेकिन आज औद्योगिक विकास के अंतर्गत सेवा क्षेत्र एवं विनिर्माण क्षेत्र इत्यादि क्षेत्र उदित होते जा रहे हैं। भारतीय समाज में भी 1990 के दशक से बहुराष्ट्रीय कंपनियों की स्थापना से नवीन औद्योगिक प्रक्रमों का आगमन प्रारंम्भ हो गया हैं,जिसमें श्रम से संबंधित नवीन कानूनों के निर्माण,श्रमिक संघों के विलय तथा श्रमिकों के कार्य की शर्तें,दशाऐं आदि मार्क्स के औद्योगिक समाज से भिन्न हैं।

कार्ल मार्क्स के अनुसार अलगाव की द्वितीय अवस्था में मनुष्य प्रकृति से पराया हो जाता हैं क्योंकि श्रमिक–वर्ग बड़े–बड़े कारखानों में मशीनों के साथ कार्य करते हुए,इतना व्यस्त हो जाता हैं कि प्रकृति से उसका सम्पर्क कट जाता हैं। उल्लेखनीय है कि पूॅजीवादी समाज के पूर्व के समाजों में मनुष्य का प्रकृति के साथ प्रत्यक्ष संबंध था एवं वह उन्हीं वस्तुओं का उत्पादन करता था,जो उसे आत्म–सन्तुष्टि प्रदान कर सके लेकिन पूॅजीवादी व्यवस्था में व्यक्ति अपनी रचनात्मक कार्य–शैली से अलग हो जाता हैं। (गाबा : 2001: 499)

अलगाव की तृतीय अवस्था में प्रतिस्पर्धा का स्तर इतना उच्च होता है कि मनुष्य अपने सहयोगियों से भी अलगावित हो जाता हैं। उच्च प्रति–स्पर्धा के परिणाम–स्वरूप एक

मनुष्य का लाभ दूसरे की हानि बन जाता हैं,जिससे मनुष्यों के हितों में तीव्र संघर्ष उत्पन्न हो जाता हैं।

अलगाव की चतुर्थ अवस्था में मनुष्य अपने–आप से भी पराया हो जाता है,क्योंकि विवशवता के साम्राज्य में मनुष्य का जीवन ही सुरक्षित नहीं रह पाता। फलस्वरूप साहित्य,कला, और संगीत के प्रति मनुष्य की कोई अभिरूचि नहीं रहती। पूॅजीवादी प्रणाली मानवीय क्षमता और गुणों को उन परिस्थितियों का दास बना देती है जो पूॅजी और सम्पत्ति के निजी स्वामित्व से पैदा होती हैं,लेकिन वर्तमान समय में उत्पादन के साधनों,तरीकों तथा स्थितियों में परिवर्तन हो रहे हैं,जिसके परिणामस्वरूप इक्कीसवीं शताब्दी में श्रमिकों की गुणवत्ता में भी परिवर्तन आया है,जो उन्नीसवीं शताब्दी में मार्क्स द्वारा व्याख्यायित की गयी दशा से भिन्न हो सकती है। (जौहरी : 2001: 577)

<u>समस्या का कथन :</u> वैश्वीकरण के काल में विश्व के सभी समाजों में अनेकों सामाजिक–आर्थिक तथा राजनीतिक परिवर्तन हो रहे हैं। श्रमिक वर्ग की दशायें भी वैश्वीकरण के प्रभाव से वंचित नहीं रही है। अलगाव श्रमिकों की एक प्रमुख मनोसामाजिक दशा होती हैं जो समय तथा स्थान के परे है। कार्ल मार्क्स द्वारा प्रस्तावित 'अलगाव' का सिद्धांत उन्नीसवीं शताब्दी में यूरोप के औद्योगिक श्रमिकों की दशाओं की व्याख्या करता है। वर्तमान समय में इक्कीसवीं शताब्दी में श्रमिकों की संख्या में बृद्धि के साथ–साथ उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति तथा कार्य की दशाओं में भी अनेकों परिवर्तन हुए है। मजदूर संघों का विलय,श्रमिक कानून,श्रमिकों की पारिवारिक आवश्यकताओं की विविधता में वृद्धि, आदि महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए है। वर्तमान में उत्पादन के क्षेत्र में विशेषीकरण की मात्रा में वृद्धि के साथ–साथ श्रम विभाजन की मात्रा में भी अनुरूपिक परिवर्तन हो रहे हैं,परिणामित अलगाव से बचा नहीं जा सकता हैं। अलगाव श्रमिकों की सामाजिक–आर्थिक दशा तथा उनकी कार्य की दशाओं से भिन्न–भिन्न रूप से प्रभावित हो सकता हैं। मार्क्स द्वारा वर्णित अलगाव की चार अवस्थाऐं भी विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न हो सकती हैं। यह आवश्यक नही हैं कि समस्त श्रेणियों (अकुशल,अर्द्धकुशल तथा कुशल) के श्रमिकों में अलगाव की प्रकृति तथा अवस्थाऐं समान हों। प्रश्न यह है कि, क्या श्रमिकों में अलगाव हैं?,क्या वर्तमान में श्रमिकों में अलगाव की प्रकृति तथा अवस्था भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में भिन्न–भिन्न हैं?, क्या श्रमिकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति उनके अलगाव की प्रकृति तथा अवस्था को प्रभावित करती हैं?,क्या भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में श्रमिकों के कार्य की शर्तें

तथा दशाऐं उनके अलगाव की प्रकृति तथा अवस्थाओं को प्रभावित करती हैं?, आदि प्रश्नों का हल खोजने के लिए प्रस्तुत शोध अध्ययन ''वैश्वीकरण के काल में श्रमिकों में अलगाव : कार्ल मार्क्स के अलगाव के सिद्धांत की प्रासंगिकता'' का चयन निम्न उद्देश्यों के साथ किया गया हैं।

अध्ययन का महत्व :

प्रस्तुत अध्ययन का महत्व इसलिए है क्योंकि यह अध्ययन अलगाव को तुलनात्मक रूप से प्रस्तुत करता हैं। भारतीय संदर्भ में अभी तक श्रमिक–वर्ग के मध्य अलगाव को लेकर तुलनात्मक अध्ययन का अभाव है तथा अलगाव के सैद्धान्तिक विवेचन के अन्तर्गत तुलनात्मक अध्ययन के पश्चात् अलगाव को एक नवीन अर्न्तदृष्टि प्राप्त होगी,जो सैद्धान्तिक स्तर पर अलगाव को नये सिरे से व्याख्यायित करेगा,जिससे मार्क्स के अलगाव के सार–तत्व को नवीन आयामों से प्रस्तुत किया जायेगा। इस अध्ययन का महत्व इसलिए भी हैं क्योंकि अभी तक भारत में अलगाव से संबंधित अंतःक्षेत्रीय अध्ययन नहीं हुआ है तथा विभिन्न स्तरों के श्रमिकों में अलगाव के अध्ययन का अभाव है इसलिए प्रस्तुत शोध श्रमिकों की वास्तिविक स्थिति से अवगत कराने में सहायता प्रदान करेगा। तुलनात्मक अध्ययन के कारण अलगाववाद से उत्पन्न समस्याओं के निराकरण हेतु एक अर्न्तदृष्टि प्राप्त होगी। मौलिक शोध होने के कारण भविष्योन्मुख नियोजन में प्रस्तुत शोध कारगर सिद्ध हो सकता है एवं भविष्य में नीति–निर्माताओं के लिए मार्ग–दर्शक के रूप में कार्य कर सकता है।

साहित्य की समीक्षा :

- **(मार्क्स : 1959),** मार्टिन,मिलिंगन,'इकॉनॉमिक एण्ड फिलॉसॉफीकल मैन्युस्क्रिप्टस्'। एडम स्मिथ के आर्थिकीय सिद्धांत के संदर्भ में अलगाव की अवधारणा का वर्णन करते हुए हीगल के द्वन्दवाद की आलोचना की गयी है एवं मार्क्सवादी दृष्टिकोण से मार्क्स के वर्ग–संघर्ष तथा निजी सम्पत्ति का विश्लेषण किया गया है। अस्तित्ववादी दर्शन का विश्लेषण अलगाव के संदर्भ में किया गया है एवं पूँजीवादी व्यवस्था में श्रमिकों के अलगावित होने की स्थिति का विश्लेषण किया गया है।
- **(हाइन : 1968),**फिट्ज पैपन हाइन, 'द एलीलेशन ऑफ मॉर्डन मैन : एन इन्ट्रोडक्शन ऑन मार्क्स एण्ड टॉनीज। पूँजीवादी सामाजिक संरचना में अलगाव के

विकास को दर्शाया गया है,अलगाव के मानवीय कारणों,शक्तियों,उदय तथा तत्कालीन समय में इसके अधिपत्य को मार्क्सवादी दृष्टिकोण से विश्लेषित किया गया है। अस्तित्ववादी दर्शन का विश्लेषण अलगाव के अवधारणा के संदर्भ में किया गया है। इनका मानना है कि तकनीक अपने उपयोगकर्ता के संदर्भ में तटस्थ एवं अहस्तक्षेप की नीति अपनाती है।

- **(ओलमैन : 1977**), बट्रेल ओलमैन, 'एलीनेशन : मार्क्स कंसेप्शन ऑफ मैन इन ए कैपिटिलिस्ट सोसाइटी'। कार्ल मार्क्स के अलगाव के सिद्धांत की व्याख्या नवीन संदर्भों में की गयी है तथा मानव के उत्पादन की प्रक्रिया के साथ संबंध,मूल्य व श्रम के मध्य संबंध तथा मार्क्स की बुर्जुआ वर्ग की आलोचनाओं को नये संदर्भों में व्याख्यायित किया गया है,साथ ही साथ मार्क्सवादी अवधारणाओं को आन्तिरिक संबंधों के दृष्टिकोण से वर्णित किया गया है।
- **(मिलीवेंड : 1981**),रेल्फ मिलीवेंड(भाषांतर कृष्ण कांत मिश्र), 'मार्क्सवाद और राजनीति'। मार्क्सवाद तथा राजनीति के अर्न्तःसंबंधों का विश्लेषण मार्क्सवादी दृष्टिकोण से किया गया है,राजनीति की सभी अवधारणाऐं संघर्ष पर आधारित होती है और संघर्ष मार्क्सवादी चिंतन का केन्द्रीय विषय है। इसके अतिरिक्त राजनीति के चेतना के महत्व पर बल दिया गया है,इनका मानना है कि एटीनियो ग्राम्शी के अतिरिक्त किसी भी मार्क्सवादी विचारक ने चेतना के संदर्भ में विश्लेषण प्रस्तुत नहीं किया है,लेकिन वर्तमान संदर्भ में इसकी बहुत आवश्यकता है।
- **(मार्क्स : 1988),**कार्ल मार्क्स (भाषांतर कृष्ण कांत मिश्र), 'पूंजी : राजनीतिक अर्थ व्यवस्था की आलोचना। वस्तु के लागत मूल्य तथा बाजारीय मूल्य के अंतर को गणतीय सिद्धांतों के आधार पर मार्क्सवादी परिपेक्ष्य से विश्लेषित किया गया है। इनका मानना है कि पूॅजीपतियों का नाम श्रमिकों के शोषण से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा रहता है,साथ ही साथ पूॅजीवादी उत्पादन प्रक्रिया के फलस्वरूप सामाजिक संरचना में आ रहे परिवर्तनों को रेखांकित किया है।
- **(जेम्स एण्ड पॉलीक्रोनियस : 1995**), जेम्स पेट्रस एण्ड कॉनिस पॉली क्रोनियसए, 'नेचर ऑफ कैपिटिलिस्ट ट्रांसफॉर्मेशन : कन्टीन्यूइगं रिलीवेंश ऑफ माक्सिज्म'। पूॅजीवादी अर्थ–व्यवस्था में आने वाले संरचनात्मक परिवर्तनों की व्याख्या करने में मार्क्सवादी उपागम की महत्ता को स्पष्ट किया गया है। वर्तमान परिवर्तनों के संदर्भ में वर्ग–संघर्ष के तथ्य के महत्व का विश्लेषण किया गया है। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था,राजनीतिक स्थिरता तथा वैश्विक बाजार व्यवस्था के संदर्भ में मार्क्सवाद की प्रासांगिकता को दर्शाया गया है।
- **(रेन्टन एण्ड विश्हार्ट : 2001),**डेविट रेन्टन एण्ड लॉरेन्स विश्हार्ट, 'मार्क्स ऑन ग्लोबलाईजेशन'। मार्क्सवादी सिद्धांतों में भू–मण्डलीकरण के सार–तत्व को स्पष्ट किया गया है एवं मार्क्सवादी विचारधारा को भू–मण्डलीकरण के संदर्भ में विश्लेषित किया गया है एवं मार्क्स के क्रांति के सिद्धांत को वर्तमान समय में नयी अर्न्तःदृष्टि से समझने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

- **(वॉल्फ : 2002),**जॉनाथन वॉल्फ, 'व्हाई डिड मार्क्स टुडे'। मार्क्स के विचारों का विश्लेषण ऐतिहासिक भौतिकवाद,श्रम,अलगाव एवं मानवता के संदर्भ में किया गया है। वर्ग–इतिहास तथा पूँजीवाद के मध्य सह–संबंध को मार्क्सवादी दृष्टिकोण से स्पष्ट किया है। धर्म के तत्वों को अलगाव के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है तथा इनका मानना है कि साम्यवादी समाज में ही अलगाव की समाप्ति हो सकती है।
- **(फिल्हो : 2002)**,एल्फ्रेडो सार्ड–फिल्हो, 'द वैल्यू ऑफ मार्क्स : पॉलीटिकल इकॉनॉमी फॉर कन्टैम्पॉरेरी कैपिटिलिज्म'। मार्क्सवादी मूल्यों की वर्तमान समय में आवश्यकता को प्रदर्शित किया गया है,एक शताब्दी से भी अधिक समय के पश्चात् भी मार्क्सवाद का निरंतर महत्व बना हुआ है,इस संदर्भ में मार्क्सवाद के महत्व को दर्शाया गया है। मार्क्सवादी परिपेक्ष्य से मार्क्सवादी योगदानों को आर्थिकीय तथा राजनीतिक संदर्भों में स्पष्ट किया गया है तथा हीगल के आदर्शवाद को अस्वीकार करते हुए भौतिकवाद की स्थापना की गयी है।
- **(काइली : 2005),**रे काइली, 'क्लेश ऑफ ग्लोबलाईजेशन : नियो लिर्बलिज्म,द थर्ड वे एण्ड एंटीग्लोबलाईजेशन'। समकालीन राजनीति का विश्लेषण भूमण्डलीकरण के संदर्भ में किया है तथा भूमण्डलीकरण के कारण समकालीन राजनीति का विश्लेषण विकासशील देशों के संदर्भ में मार्क्सवादी दृष्टिकोण से किया गया है। इनका मानना है कि भूमण्डलीकरण के कारण विकासीय संकट सामने आते है एवं इसे निर्धनता वृद्धि तथा असमानता के साथ जोड़कर इसका विश्लेषण प्रस्तुत किया है।
- **(मार्क्स : 2007),**कार्ल मार्क्स (अनुवादितः), 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र'। मार्क्सवादी परिपेक्ष्य से एतिहासिक भौतिकवाद के आधार पर एतिहासिक विकास (आदिम साम्यवाद से वर्तमान तक) को वैज्ञानिक आधार पर विश्लेषित किया है। शोषणविहीन तथा श्रेणीविहीन समाज की स्थापना के उद्‌देश्य की पूर्ति के लिए साम्राज्यवाद,पूँजीवाद के उन्मूलन की आवश्यकता पर बल दिया गया है।
- **(पालग्रेव : 2009),**इ0वेंडलिंग पालग्रेव, 'मार्क्स ऑन टेक्नॉलॉजी एण्ड एलीनेशन'। प्रौद्योगिकी मनुष्य के जीवन को गुणात्मक रूप से उच्च करने में सहायक होती है लेकिन कुछ आन्तिरिक बलों के कारण पूँजीपति प्रौद्योगिकी का उपयोग अधिकतम लाभ कमाने के संदर्भ में करने लगते है। मार्क्सवादी दृष्टिकोण से तकनीकी तथा कार्य के संबंधों का विश्लेषण किया गया है। इनका मानना है कि तकनीक की सहायता से उत्पादन का स्तर तो उच्च कर दिया जाता है लेकिन उसके सापेक्ष श्रमिकों का वेतन तथा अन्य सुविधाऐं उच्च नहीं की जाती है।
- **(मुसवी : 2011),**शिरीन मुसवी, 'कैपिटिलिज्म,कॉलॉनिज्म एण्ड ग्लोबलाईजेशन'। भारत की एतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ ही साथ समसामायिक परिस्थितियों का वर्णन मार्क्सवादी परिपेक्ष्य से किया गया है। इनका मानना है कि संकटग्रस्त वर्तमान से आशान्वित भविष्य के लिए परिवर्तनों की आवश्यकता है। भारतीय संदर्भ में पूँजीवाद,उपनिवेशवाद तथा प्रौद्योगिकी तीनों घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए है। यद्यपि उपनिवेशवाद पूँजीवाद की प्रारंभिक शर्त है लेकिन अमेरिका के अनौपचारिक

उपनिवेश ने विश्व के अधिकांश हिस्से में पुराने साम्राज्यवाद का स्थान ग्रहण कर लिया है।

- **(एगल्टन : 2011),**टैरी एगल्टन, 'वहाई मार्क्स वाज राइट'। आर्थिक जीवन में भौतिकवाद,वर्ग,राज्य एवं हिंसात्मक क्रांति को मार्क्सवादी परिपेक्ष्य से नवीन सामाजिक आंदोलनों के संदर्भ में विश्लेषित किया गया है। मार्क्सवाद की प्रांसांगिकता को एतिहासिक संदर्भ में वर्णित करते हुए आज भी इसकी प्रांसांगिकता को स्पष्ट किया गया है जैसे उद्योगों का राष्ट्रीयकरण,सहकारिता,लोककल्याण,बैंकिंग उद्योग का सामाजीकरण,प्रगामी कर प्रणाली इत्यादि मार्क्सवाद के परिणामस्वरूप ही संभव हुए है। इन्होंने पूँजीवादी शोषण को अमेरिकी संदर्भ में विश्लेषित किया है तथा स्पष्ट किया है कि आज भी मार्क्सवाद पूर्णरूप से अप्रासांगिक नहीं है।
- **(मुस्टो : 2012),** 'मार्सिलो मुस्टो, 'मार्क्स फॉर टुडे'। वर्तमान समय में मार्क्सवाद के समक्ष उत्पन्न नवीन चुनौतियों को दर्शाया है,मार्क्सवाद की नवीन संदर्भों में व्याख्या की है। मार्क्सवादी परिपेक्ष्य से वर्तमान वित्तीय संकटों का विश्लेषण किया है। इनका मानना है कि वर्तमान वित्तीय संकटों के लिए निर्वाध रूप से पूँजीवादी अर्थव्यवस्था जिम्मेदार है।
- (मैत्रेय : 2012),किरण मैत्रेय, 'माक्सिज्म इन इण्डिया :फ्रॉम डिक्लाइन टू डिवार्शल'। भारत में मार्क्सवाद के उदय,विकास तथा भारत में मार्क्सवादी विचारधारा की असफलताओं के कारकों का विश्लेषण किया है। इनका मानना है कि वर्तमान समय में भारत में मार्क्सवादी विचारधारा समकालीन राजनीतिक परिपेक्ष्य में मार्क्सवादी सिद्धांतों तथा साधनों के माध्यम से मात्र जीवित रहने के लिए संघर्ष कर रही है।
- **(लाल्टू : मार्च–2013),**लाल्टू, 'समयांतर पत्रिका'। फूकोयामा द्वारा मानवता के सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास के अंत को मार्क्सवादी दृष्टिकोण से गलत माना है,क्योंकि सांस्कृतिक विकास स्वयं में एक जटिल तथ्य है और इसे आर्थिक संरचना से अलग नहीं किया जा सकता है। मार्क्स की प्रासांगिकता तब तक बनीं रहेगी जब तक असमानता का स्तर समाप्त नहीं हो जाता है। पूँजीवादी विकास कभी संकटमुक्त नहीं हो सकता,राज्य तथा अन्य एजेंसियों के हस्तक्षेप से इन संकटों को कुछ समय के लिए टाला जा सकता है लेकिन इन्हें पूर्णरूप से कभी समाप्त नहीं किया जा सकता है।
- **(आर्थाय : 2013),**वेंकटेश आर्थाय, 'माक्सियन पॉलीटीकल इकॉनॉमी :एन इंट्रोडक्शन टू कैपिटल'। कार्ल मार्क्स की पुस्तक कैपिटल का बदलते हुए संदर्भ में प्रगतिशील एवं तार्किक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। 1970 के दशक से वर्तमान समय तक

पूँजीवादी व्यवस्था के समक्ष उत्पन्न परिवर्तनों को मार्क्सवादी परिपेक्ष्य से विश्लेषित किया है। मार्क्स के अतिरिक्त मूल्य के सिद्धांत को वर्तमान परिपेक्ष्य में विश्लेषित करते हुए आज भी इसकी प्रासांगिकता को उजागर किया है।

नोट – इसके अतिरिक्त और भी बहुत सारी पुस्तकों एवं केस स्टडी की सहायता आगे शोध के दौरान ली जायेगी।

उद्देश्य :

- भारत में वैश्वीकरण के सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक प्रभाव का अध्ययन करना।
- कार्ल–मार्क्स के अलगाव के सिद्धांत की व्याख्या करना।
- आगरा जनपद के श्रमिकों की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
- आगरा जनपद में भवन निर्माण,चमड़ा उद्योग तथा औद्योगिक उत्पादन क्षेत्रों में कार्यरत श्रमिकों में अलगाव की प्रकृति तथा अवस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- आगरा जनपद के श्रमिकों की विभिन्न श्रेणियों (कुशल,अर्द्धकुशल तथा अकुशल)में अलगाव की प्रकृति तथा अवस्था का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- वर्तमान में कार्ल–मार्क्स के अलगाव के सिद्धांत की प्रासंगिकता का विश्लेषण करना।

परिकल्पना :

- श्रमिकों के सामाजिक–आर्थिक तथा राजनीतिक पृष्ठभूमि तुलनात्मक रूप से भिन्न है।
- भवन निर्माण,चमड़ा उद्योग तथा औद्यौगिक उत्पादन क्षेत्रों में कार्यरत श्रमिकों में अलगाव की प्रकृति तथा अवस्थाऐं भिन्न–भिन्न होती है।

- कुशलता के आधार पर श्रमिकों में अलगाव की प्रकृति तथा अवस्थाऐं भिन्न–भिन्न होती है।
- वर्तमान में कार्ल मार्क्स की अलगाव की अवधारणा प्रासांगिक है।

शोध–विधि :

- अध्ययन का समग्र– प्रस्तुत शोध प्रस्ताविका में आगरा जनपद की तीन औद्योगिक कंपनियों के श्रमिकों को शामिल किया जायेगा,जोकि विनिर्माण उद्योग,चमड़ा उद्योग तथा औद्योगिक उत्पादन उद्योग से संबंधित होंगे।
- निदर्शन– निदर्शन के रूप में विनिर्माण उद्योग,चमड़ा उद्योग तथा औद्योगिक उत्पादन उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों को शामिल किया जायेगा।
- निदर्शन विधि – इसका चयन देव निदर्शन के माध्यम से श्रमिकों की सूची/ समग्र में से 10 – 15 प्रतिशत किया जायेगा।
- तथ्य संकलन की विधि – प्राथमिक तथ्य संकलन हेतु साक्षात्कार–अनुसूची,अवलोकन विधि एवं वैयक्तिक अध्ययन विधि का प्रयोग किया जायेगा। तथ्य संकलन के द्वितीयक आंकड़ों में विभिन्न पत्रिकाओं,साहित्यों,पुस्तकों,समाचार पत्रों,लेखों,विभिन्न प्रकाशित एवं अप्रकाशित प्रतिवेदनों को उपयोग में लाया जायेगा।
- तथ्य संकलन के स्रोत – तथ्य संकलन के प्राथमिक स्रोत में उत्तरदाताओं द्वारा दी गयी सूचनाओं को शामिल किया जायेगा। तथ्य संकलन के द्वितीयक स्रोत में उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों की सूची,समाचार पत्रों,लेखों एवं प्रतिवेदनों से प्राप्त सूचनाओं को शामिल किया जायेगा।
- सांख्यिकीय विश्लेषण/उपकरण – प्राथमिक व द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों का सारणीयन तथा विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि के द्वारा किया जायेगा। सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए केन्द्रीय प्रवृत्ति की माप, काई–स्क्वायर, मानक विचलन, सहसंबंध, प्रतिपगमन तथा अप्राचल परिपक्ष का प्रयोग किया जायेगा।

अस्थाई अध्यायीकरण :

1. भारत मे वैश्वीकरण ।

2. कार्ल–मार्क्स का अलगाव का सिद्धांत
3. आगरा जनपद के श्रमिको की सामाजिक– आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि।
4. आगरा जनपद के श्रमिकों में(भवन निर्माण,चमड़ा उद्योग तथा औद्योगिक उत्पादन क्षेत्रों में कार्यरत श्रमिकों में)अलगाव की तुलनात्मक स्थिति।
5. `आगरा जनपद के श्रमिकों मे अलगाव की प्रकृति तथा अवस्थाओंके विभिन्न स्तर।
6. मार्क्सकेअलगाव के सिद्धांत की प्रासंगिकता।
7. निष्कर्ष।

<u>संदर्भ ग्रंथ सूची :</u>

- आर्शीर्वादम् एडी0 एण्ड मिश्र कृष्णकांत – 2014 'राजनीति विज्ञान',एस0चन्द एण्ड कं0 प्रा0लि0,नई दिल्ली।
- भार्गव राजीव एण्ड आचार्य अशोक–2012, 'राजनीतिक सिद्धांत : एक परिचय',पीयरसन पब्लिकेशन,नई दिल्ली।
- गाबा ओमप्रकाश – 2001, 'राजनीतिक सिद्धांत की रूपरेखा',मयूर पेपरबैक्स,नोएडा।
- भगत आर0एम0 एण्ड टंडन सतीश – 2013, ' राजनीतिक विचारक : प्लेटो से मार्क्स ' ,न्यू एकडमिक पब्लिसिंग कम्पनी,जालंधर ।
- किमलिका बिल (अनुवाद कमल नयन चौवे) – 2010, 'समकालीन राजनीतिक दर्शन : एक परिचय',पीयरसन पब्लिकेशन,नई दिल्ली।
- जौहरी जे0एस0 एण्ड जौहरी सीमा – 2001, 'आधुनिक राजनीति विज्ञान के सिद्धांत',स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा0लि0,नई दिल्ली।
- संधू सिंह ज्ञान –1999, 'राजनीतिक सिद्धांत',हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय,दिल्ली।
- वर्मा एस0पी0–2002, 'आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत',विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा0लि0,नई दिल्ली।

- वेपर सी0एल0–2000, 'राजदर्शन का स्वध्यायन',किताब महल पब्लिकेशन,इलाहाबाद।
- मिश्र गिरीश–2013, 'नव उदारवाद : विभिन्न आयाम',ग्रंथ शिल्पी (इण्डिया)प्रा0लि0,नई दिल्ली।
- हॉलमेस लेसली–2009, 'कम्युनिज्म :ए वैरी शॉर्ट इन्ट्रोडक्शन',ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस ,न्यूयार्क।
- सिंगर पीटर–1986,'मार्क्स :ए वैरी शॉर्ट इन्ट्रोडक्शन',ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस ,न्यूयार्क।
- मार्क्स कार्ल एण्ड एंगेल्स फेडरिक –2007, 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' ,राजस्थान पीपुल्स पब्लिसिंग हाउस प्रा0लि0,जयपुर।
- मार्क्स काल –1988, 'पूँजी–राजनीति अर्थशास्त्र की आलोचना',राजस्थान पीपुल्स पब्लिसिंग हाउस प्रा0लि0,जयपुर।
- जैन एम0पी0 –2013, 'राजनीति के सिद्धांत',नई दिल्ली।
- डा0शर्मा प्रभुदत्त–2010,'पाश्चात्य राजनीतिक विचारों का इतिहास' ,कॉलिज बुक डिपो,जयपुर।
- वाल्फ जोनाथन–2002, 'व्हाई डिड मार्क्स टुडे',ऑक्सफोर्ड पब्लिकेशन,न्यूयार्क।
- सार्ड एल्फ्रेडो एण्ड फिल्हो –2002,'द वेल्यू ऑफ मार्क्स : पॉलीटिकल इकॉनॉमी फॉर कन्टम्परेरी कैपिटिलिज्म',रूटलेज पब्लिकेशन,लंदन।
- मुस्टो मार्शिलो–2012,'मार्क्स फॉर टुडे',रूटलेज पब्लिकेशन,लंदन।
- एगल्टन टैरी–2011,'व्हाई मार्क्स वॉज राइट',येल यूनीवर्सिटी,लंदन।
- पेट्रस जेम्स एण्ड पॉलीक्रोनियस क्रानिस–जनवरी,1995, 'नेचर ऑफ कैपिटिलिस्ट ट्रांसफॉरमेशन : कन्टीन्यूइंग रिलेवेन्श ऑफ माक्सिज्म',इ0पी0डब्लू0,वॉल्यूम–30,पेज 38–44 ।
- मार्क्स काल –1959, 'इकॉनॉमिक एण्ड फिलॉसफीकल मैन्युस्क्रिप्टस,' प्रोग्रेस पब्लिकेशन,मॉस्को।
- लाल्टू –मार्च,2013, 'समयांतर पत्रिका'।
- ओलमेन वट्रेल –1977, 'एलीनेशन : मार्क्स कंसेप्शन ऑफ मेन इन ए कैपिटिलिस्ट सोसाइटी',कैम्ब्रिज यूनीवर्सिटी प्रेस,न्यूयार्क।

- रेन्टन डेविड –2001, 'मार्क्स ऑन ग्लोबलाईजेशन', लॉरेन्स एण्ड विस्हार्ट पब्लिकेशन,लंदन।
- काईली रे – 2005, 'द क्लेश ऑफ ग्लोबलाईजेशन : नियो लिब्रलिज्म,द थर्ड वे एण्ड एन्टी ग्लोबलाईजेशन',ब्रिल लाइडिंन पब्लिकेशन,बॉस्टन।
- मुसबी शिरीन – 2011, 'कैपिटिलिज्म,कॉलॉनिज्म एण्ड ग्लोबलाईजेशन',तुलिका बुक्स पब्लिकेशन,नई दिल्ली।
- आर्थाय वेंकटेश –2013, 'मार्क्सियन पॉलीटिकल इकॉनॉमी : एन इन्ट्रोडक्शन टू कैपिटल' ,वॉल्युम फस्ट।
- हाईम पेपन –1968, 'द एलीनेशन ऑफ मॉर्डन मैन :एन इन्ट्रोडक्शन ऑन मार्क्स एण्ड टॉनीज',न्यूयार्क मंथली रिब्यू प्रेस,न्यूयार्क।
- वेंडलिंग इ0 –2009, 'कार्ल मार्क्स ऑन टेक्नॉलॉजी एण्ड एलीनेशन' ,पालग्रेब मैकमिलन पब्लिकेशन,न्यूयार्क।
- मिलिवेन्ड रेल्फ (अनुवादक मिश्र कृष्ण कांत) – 1981, 'मार्क्सवाद और राजनीति',प्रगति पब्लिकेशन,दिल्ली।
- मार्क्स कार्ल –1988,'पूंजी : राजनीतिक अर्थव्यवस्था की आलोचना',खण्ड–3,राजस्थान पीपुल्स पब्लिसिंग हाउस प्रा0लि0,जयपुर।
- मार्क्स कार्ल–2007'कम्युनिस्टि घोषणापत्र',राजस्थान पीपुल्स पब्लिसिंग हाउस प्रा0लि0,जयपुर।
- मैत्रा किरण – 2012, 'मार्क्सिज्म इन इण्डिया : फ्रॉम डिक्लाइन टू डिवासेल',रॉली बुक्स प्रा0लि0,नई दिल्ली।